मेघदूत विषयक वक्तव्य: 02

मेघदूत (पूर्व मेघ) 06 से 10 श्लोक अनुवाद सहित

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स प्रथम वर्षीय छात्र-छात्राओं के द्वितीय पत्र की प्रथम अन्विति के लिए। मेघदूत के पूर्व मेघ के 1 से 25 तक श्लोकों का हिंदी अनुवाद विषयक पाठ्य सामग्री)

पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

(06)

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां

जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।

तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद्दूरबन्धुर्गतोऽहं

याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।।

अर्थ:- पुष्कर और आवर्तक नामवाले मेघों के लोक-प्रसिद्ध वंश में तुम जन्मे हो। तुम्हें मैं इन्द्र का कामरूपी मुख्य अधिकारी जानता हूँ। विधिवश, अपनी प्रिया से दूर पड़ा हुआ मैं इसी कारण तुम्हारे पास याचक बना हूँ। गुणीजन से याचना करना अच्छा है, चाहे वह निष्फल ही रहे। अधम से माँगना अच्छा नहीं, चाहे सफल भी हो।

(7)

संतप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद! प्रियाया:

संदेशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।

गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां

बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या ।।

अर्थ:- है मेघ! जो सन्तप्त हैं, तुम उनके रक्षक हो। इसलिए कुबेर के क्रोधवश विरही बने हुए मेरे सन्देश को प्रिया के पास पहुँचाओ। यक्षपतियों की अलका नामक प्रसिद्ध पुरी में तुम्हें जाना है, जहाँ बाहरी उद्यान में बैठे हुए शिव के मस्तक से छिटकती हुई चाँदनी उसके भवनों को धवलित करती है।

(8)

त्वामारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ता:

प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिता: प्रत्ययादाश्वसत्य:।

क: संनद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां

न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो य: पराधीनवृत्ति:।।

अर्थ:- जब तुम आकाश में उमड़ते हुए उठोगे तो प्रवासी पथिकों की स्त्रियाँ मुँह पर लटकते हुए घुँघराले बालों को ऊपर फेंककर इस आशा से तुम्हारी ओर टकटकी लगाएँगी कि अब प्रियतम अवश्य आते होंगे। तुम्हारे घुमड़ने पर कौन-सा जन विरह में व्याकुल अपनी पत्नी के प्रति उदासीन रह सकता है, यदि उसका जीवन मेरी तरह पराधीन नहीं है?

(9)

मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां

वामश्चायं नदति मधुरं चाकतस्ते सगन्ध:।

गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमाला:

सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाका:।।

अर्थ:- अनुकूल वायु तुम्हें धीमे-धीमे चला रही है। गर्व-भरा यह पपीहा तुम्हारे बाएँ आकर मीठी रटन लगा रहा है। गर्भाधान का उत्सव मनाने की अभ्यासी बगुलियाँ आकाश में पंक्तियाँ बाँध-बाँधकर नयनों को सुभग लगनेवाले तुम्हारे समीप अवश्य पहुँचेंगी।

(**10)**

तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी-

मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।

आशाबन्ध: कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां

सद्य:पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रुणद्धि।।

अर्थ:- विरह के दिन गिनने में संलग्न, और मेरी बाट देखते हुए जीवित, अपनी उस पतिव्रता भौजाई को, हे मेघ, रुके बिना पहुँचकर तुम अवश्य देखना। नारियों के फूल की तरह सुकुमार प्रेम- भरे हृदय को आशा का बन्धन विरह में टूटकर अकस्मात बिखर जाने से प्राय: रोके रहता है।